आज का पुरुषार्थ 10 June 2022

Source: BK Suraj bhai **Website**: www.shivbabas.org

धारणा – *" हमें ब्राह्मण सो फ़रिश्ता सो देवता बनना है .. तो लाइट जीवन जीना सीखें "*

हम **सर्वश्रेष्ठ** ब्राह्मण है। भगवान की नजरों में रहनेवाली **महान आत्मायें**, ऐसी आत्मायें जिनकी पालना स्वयं शिवबाबा कर रहे है।

जो **परमात्मम प्यार में पल रहे है।** जिनका श्रृंगार स्वयं भगवान कर रहे है। हमें ब्राह्मण सो फ़रिश्ता फिर देवता बनना है। फ़रिश्ता अर्थात बहुत लाइट होना है।

सम्पूर्ण पवित्र बनना है। किसी से हमारा कोई रिश्ता नहीं। अर्थात सारे रिश्ते एक से। बाकी देह के रिश्तों को निभाते हुए उनके ममत्व से मुक्त रहना है। ऐसी स्थिति होगी फ़रिश्ता की।

हम इस संसार में रहे और संसार से पूरी तरह अलिप्त रहे। हम इस संसार में रहे और इसके **आकर्षण हमें अपनी ओर खींच न पाये।** हम इस दुनिया में रहे लेकिन विकारों का जंजाल हमें अपने ओर फंसा न सके। यह स्थिति है फ़रिश्ते की।

आप सोचेंगे बहुत कठिन है यह स्थिति। हम तो उलझे हुए है इस संसार में। हम तो **कर्मक्षेत्र** पर बिल्कुल बंधे हुए है। रिश्ते नाते में, मोह में भी हम बिल्कुल ग्रस्त है।

परन्तु ऐसा कुछ नहीं है जो इन सब चीज़ों से हम बाहर निकाल नहीं सकते। हमें **योग** की बहुत अच्छी अभ्यास भी करने है।

रिश्ते और नातों में तो हमें रहना ही है। हम संसार में रहते है। तो संसार से भाग तो नहीं सकते! आप **कर्मक्षेत्र** पर है, काम धंधों में है। अनेक लोगों के सम्बन्ध सम्पर्क में आपको आना पड़ता है।

लेकिन एक बात हम अगर रोज पक्की कर ले, **यह सब आत्मायें है।**

भले ही आपके बच्चे है, पति है, पत्नी है। आप इस दृष्टि से उन्हें निहारें .. यह सब आत्मायें है।

और हम सब आत्मायें **सतयुग** से चलते आ रहे है। कभी किसी सम्बन्ध में और कभी किसी सम्बन्ध में। कभी हम साथ थे तो कभी दूर।

अब फिर हमारा साथ मिला है। अब हमें एक दुसरे को **आत्मिक स्नेह** देना है। इससे मोह-ममत्व छूटता जायेगा। रही बात काम धंधों की, जो मनुष्य को उलझाता है। उसमें भी बहुत सहज practical करते रहे।

एक समर्पण भाव ...

" बाबा , यह कार्य तो हम आपके लिए कर रहे है "

अपने सब कार्य करने के बाद उन्हें प्रभु अर्पण कर दो। पहले यह फीलिंग रखें ...

" हमारा हर कार्य ईश्वर अर्थ है "

और कार्य करने के बाद भी उस कार्य को उसके परिणाम को प्रभु अर्पण कर दे।

और एक अभ्यास करे ...

" मैं आत्मा इस देह द्वारा कर्म करा रही हूँ "

ऐसा नहीं कि सारा दिन आपको यह सब याद करते रहना है। सवेरे बहुत अच्छी तरह एक अभ्यास कर ले। कर्मक्षेत्र पर जाते समय और एकबार अभ्यास कर ले। कर्म जब समाप्त होता है तब फिर एकबार यह अभ्यास कर ले।

तो बहुत ही **अनासक्त स्थिति रहेगी।** हम स्वयं को बन्धनों से मुक्त मेहसूस करेंगे। हमें ब्राह्मण सो फ़रिश्ता बनना है। अपने इस स्वरुप को देखें बहुत अच्छी तरह। अपने को भी देखें और एक संकल्प दे ....

" मैं फ़रिश्ता हूँ .. मैं पवित्रता का फ़रिश्ता हूँ .. मेरे अंग अंग से पवित्र किरणें फैल रही है "

" मैं आत्मा मस्तक में चमक रही हूँ .. मुझसे पवित्र किरणें फैल रही है .. मेरे अंग अंग से भी यह पवित्र किरणें फैल रही है "

और अपने को देखें ....

" मैं धरती से थोड़ा ऊपर हूँ .. बिल्कुल लाइट .. जैसे लाइट का स्वरुप धारण कर मैं कहीं भी आ जा सकती हूँ "

ऐसा बहुत अच्छा अनुभव करेंगे। यह न सोचे कि फ़रिश्ता बनना बहुत कठिन है। पर यह संकल्प करेंगे ....

" मैं पवित्रता का फ़रिश्ता हूँ .. इस धरा पर अवतरित हुआ हूँ .. ईश्वरीय कार्य में सहयोग देने के लिए।

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org